

# भौगोलिक परिप्रेक्ष्य में प्रादेशिक विकास

*Edition*  
**2023**

## Geographic Perspective of Regional Development

डॉ. दिनेश कुमार



 **SIDDHI  
VINAYAK**  
PUBLICATIONS





# भौगोलिक परिप्रेक्ष्य में प्रादेशिक विकास (*Geographic Perspective of Regional Development*)

संपादक

डॉ. दिनेश कुमार

सहायक आचार्य, भूगोल विभाग,

टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर

राजस्थान।

2023



सिद्धि विनायक पब्लिकेशन्स

(iii)



प्रकाशक



**सिद्धि विनायक पब्लिकेशन्स**

कुलचन्द्र, हनुमानगढ (राजस्थान) 335526

94611-09470, 83063-09470

publicationssiddhivinayak@gmail.com

**ISBN : 978-81-965118-1-4**

© सिद्धि विनायक पब्लिकेशन्स

प्रथम संस्करण (2023)

**मूल्य : ₹ 1000.00**

**शब्द संयोजक एवं डिजाइन : कमल जीत सिंह (तकनीकी सहायक)**

**मुद्रक : जैन ऑफसेट प्रिण्टर्स, संगरिया**

**वैधानिक चेतावनी**

- शोध आलेख/चैप्टर/अध्याय में दिए गए विचार लेखकों/शोधकर्ताओं के अपने विचार हैं। इसके लिए प्रकाशक/संपादक/सह-संपादक जिम्मेदार नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद के लिए न्याय क्षेत्र हनुमानगढ, राजस्थान होगा।
- इस पुस्तक का प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना पुनः प्रकाशन/फोटो कॉपी/स्केल इत्यादि माध्यमों से पुनर्मुद्रण करना कॉपीराइट अधिनियम के अनुसार दंडनीय अपराध है।

S.N.	शीर्षक -लेखक	Pages
	भूमिका	(vii) - (viii)
1	प्रादेशिक विकास एवं नियोजन -डॉ. उपेन्द्र कुमार	1 - 9
2	प्रादेशिक विकास में अनुसूचित जनजातीय महिलाओं की भूमिका -डॉ. उर्मिला सभरवाल	10 - 21
3	भारत के कृषि विकास में क्षेत्रीय असंतुलन एवं नियोजन की रणनीति -डॉ. अनिल कुमार सिन्हा	22 - 38
4	पर्यावरण एवं सतत पोषणीय विकास -डॉ. सीमा सिंह	39 - 46
5	पर्यावरण संरक्षण -डॉ. आनन्द लाल	47 - 55
6	क्षेत्रीय संसाधनों के आंकलन-विश्लेषण में सुदूर संवेदन तकनीक का अनुप्रयोग -नारायण लाल	56 - 68
7	भारत में घटता भू-जल स्तर : एक विकट समस्या -राज कुमार वर्मा	69 - 78
8	भूमि संसाधन प्रबंधन और योजना में रिमोट सेंसिंग और जीआईएस का अनुप्रयोग -अनिल कुमार, अनु ज्याणी	79 - 95
9	विश्व में संसाधन - संसाधन उपयोग, संरक्षण व प्रबंधन -जुगल किशोर सैनी	96 - 102

10	ग्रामीण विकास एवं छत्तीसगढ की सुराजी ग्राम योजना -डॉ. श्रीमती कल्पना लाम्बे	103 - 112
11	संरक्षण कृषि के माध्यम से संसाधन प्रबंधन -डॉ. नरेन्द्र सिंह	113 - 121
12	ऊर्जा संरक्षण : चुनौतियाँ और समाधान -डॉ. वेद प्रकाश	122 - 142
13	औद्योगीकरण का पर्यावरण पर प्रभाव : एक अध्ययन -अंजूलिका, डॉ. रूपेश कुमार मिश्रा, कादम्बरी मिश्रा	143 - 153
14	इटावा जनपद के भौगोलिक परिदृश्य का विश्लेषणात्मक अध्ययन -प्रो. (डॉ.) प्रेम प्रकाश राजपूत, डा. ओम जी, डॉ. रूपम राजपूत	154 - 172
15	संसाधन उपयोग, संरक्षण व प्रबंधन -डॉ. गुड़िया कुमारी	173 - 181
16	विश्व तापमान में वृद्धि -डॉ. रूपेश कुमार मिश्रा, डॉ. कादम्बरी मिश्रा, अंजूलिका	182 - 187
17	कृषि पशुपालन : सामाजिक-आर्थिक विकास में 'सोजत नस्ल' का योगदान (सोजत) पाली जिले के विशेष संदर्भ में -अहमद मसाहिद	188 - 198
18	INTEGRATED AREA DEVELOPMENT PLANNING - Dr. Ajay Tiwari	199 - 216

### 3

## भारत के कृषि विकास में क्षेत्रीय असंतुलन एवं नियोजन की रणनीति



डॉ. अनिल कुमार सिन्हा

भूगोल विभाग

राजीव गांधी शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय

अंबिकापुर, छत्तीसगढ़।

mail id- [anilambk1369@gmail.com](mailto:anilambk1369@gmail.com)

#### प्रस्तावना

आज के विकसित देशों के इतिहास से स्पष्ट होता है कि आर्थिक विकास के प्रारम्भ में कृषि का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। कृषि उत्पादन के बढ़ने से औद्योगिक विकास को कई प्रकार से सहायता मिली है। कृषि से हटकर कुछ मजदूर औद्योगिक केन्द्रों में काम कर सकें, साथ ही भोजन उत्पादन का भार उनके ऊपर नहीं रहा और उन्हें भोजन मिलता रहा। कृषि-उत्पादन बढ़ने से प्रति व्यक्ति आय की वृद्धि हुई। लोगों की क्रय-क्षमता बढ़ी, परिणामतः बाजार का विस्तार हुआ, इससे औद्योगिक उत्पादन की अधिक खपत हो सकी। इससे अपेक्षाकृत अधिक महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि औद्योगिक विकास के प्रारम्भिक काल में कृषि तथा ग्रामीण क्षेत्रों से पूंजी प्राप्त हुई। अतिरिक्त कृषि उत्पादन का अंतर्राष्ट्रीय व्यापार भी किया गया, जो पुनः पूंजी के एकत्रण में सहायक हुआ तथा उसने विदेशी औद्योगिक कम्पनियों को भी आकर्षित किया। अतः यह स्पष्ट है कि आर्थिक विकास की पहली सीढ़ी कृषि विकास है।

**कुंजी शब्द (Key Words)**— क्षेत्रीय असंतुलन, कृषि उत्पादकता, शुद्ध बोया गया क्षेत्र, नियोजित विकास।

#### कृषि विकास की संकल्पना

क्षेत्रीय विकास एक बहुआयामी प्रक्रिया होती है, जिसमें संरचनात्मक परिवर्तन (Structural Changes) दृष्टिकोण परिवर्तन (Attitude Changes) एवं संस्थात्मक परिवर्तन (Institutional Changes) सम्मिलित होता है। क्षेत्रीय विकास



का प्रमुख प्रखण्ड कृषि विकास से तात्पर्य किसी क्षेत्र में कृषि विकास हेतु नई दशाओं का परिवर्धन, अनुकूलन एवं उनकी अंतर्निहित सम्भावनाओं का पूर्ण विकास होता है। देश के भूगोल वेत्ताओं का भी कहना है कि कृषि विकास का तात्पर्य कृषि की निम्न उत्पादकता वाली परंपरागत पद्यति में परिष्कार करके उसे उच्च उत्पादकता से युक्त वैज्ञानिक एवं आधुनिक स्वरूप प्रदान करना है, जिसके अंतर्गत उपलब्ध भूमि, श्रम, पूंजी एवं अन्य संसाधनों की संयुक्त रूप में उत्पादकता में वृद्धि करने का प्रयास किया जाता है। वस्तुतः कृषि विकास एक प्रकार का पारिस्थितिक परिवर्तन है जो नये विचारों एवं आविष्कारों के प्रसार से निकटतापूर्वक जुड़ा हुआ है।

भारतीय कृषि भारतीय अर्थतंत्र का मुख्य आधार रही है और है। इस तथ्य की पुष्टि हेतु केवल कृषि प्रखंड द्वारा कुल घरेलु उत्पादन के रूप में नहीं देखा जाता बल्कि कृषि पर निर्भर रहने वाले लोगों की संख्या और कृषि उद्योगों के रूप में भी कृषि प्रखण्ड की भूमिका के रूप में देखा जाता है। देश के प्रमुख औद्योगिक प्रखण्ड जैसे वस्त्र उद्योग, चीनी उद्योग, खाद्य प्रसंस्करण आदि कृषि पर आधारित है।

क्षेत्रफल के दृष्टिकोण से भारत एक विशाल देश है। उच्चवाच, जलवायु की विविधता एवं अक्षांशीय विस्तार अधिक होने के कारण देश में कृषि के विकास में क्षेत्रीय असंतुलन पाया जाता है। यद्यपि देश में चावल, गेहूँ, दलहन तिलहन, गन्ना तथा कपास जैसी फसलों के उत्पादन एवं उत्पादकता में विश्व में प्रमुख स्थान है। इसी के साथ-साथ दूध, फलों एवं सब्जियों के उत्पादन में भी शीर्ष स्थान पर है। भारत में आजादी के बाद कृषि उत्पादन एवं उत्पादकता में काफी तेजी से वृद्धि हुई है। लेकिन चीन, ब्राजील और संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे देशों की तुलना में देश में प्रति इकाई उत्पादन अभी भी कम है। साथ ही इसमें कृषि उत्पादकता के दृष्टिकोण से राज्यों के बीच में अंतर विद्यमान है।

**कृषि विकास के क्षेत्रीय प्रतिरूप में असंतुलन का मुख्य सूचक**

**(अ) शुद्ध बोई गई भूमि का असमान वितरण—**

इसे फसल का निराक्षेत्र भी कहा जाता है। इसका तात्पर्य वह वास्तविक क्षेत्रफल होता है जिस पर फसलें उगाई जाती हैं तथा दो फसली क्षेत्र (Double Cropped Area) को एक ही बार

गिना जाता है। भारत में शुद्ध कृषि भूमि क्षेत्र 140130 हजार हेक्टेयर मौजूद है जो कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल का 45.52 प्रतिशत है।

तालिका क्रमांक-1

संवर्ग प्रतिशत	भारत में भूमि उपयोग : शुद्ध बोई गई भूमि (2014-15) सम्मिलित राज्यों के नाम
80 से अधिक	पंजाब, हरियाणा
60 से 80	उत्तरप्रदेश, पश्चिम बंगाल, दमन दीव, लक्षदीव
50 से 60	राजस्थान, बिहार, गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक, केरल,
30 से 50	असम, छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, आन्ध्रप्रदेश, गोवा, तमिलनडु, तेलंगाणा, दादरा एवं नगर हवेली, पाण्डिचेरी,
10 से 30	हिमाचल प्रदेश, उत्तरांचल, सिक्किम, नागालैण्ड, मणिपुर, त्रिपुरा, मेघालय, झारखण्ड, उड़ीसा, दिल्ली, चंडीगढ़, जम्मूकश्मीर,
10 से कम	अरुणाचल प्रदेश, मिजोरम, अंडमान निकोबार द्वीप समूह

देश में शुद्ध बोई गई भूमि 1950-51 जहां 41.80 प्रतिशत थी, वह 1970-71 में बढ़ कर 46.20 प्रतिशत, सन् 2000-01 में 46.31 एवं 2014-15 में थोड़ा घटकर 45.52 प्रतिशत रह गया है। भारत में कृषित भूमि का वितरण प्रतिरूप असमान पाया जाता है। उत्तर



भारत के राज्य पंजाब (81.83 प्रतिशत), हरियाणा (80.57 प्रतिशत), उत्तर प्रदेश (68.67 प्रतिशत), एवं पश्चिम बंगाल (60.32 प्रतिशत), में शुद्ध बोई गई भूमि का सर्वाधिक क्षेत्र मौजूद है। समतल भूभाग, मैदानी उर्वर भूमि, सिंचाई के पर्याप्त साधन, जल स्तर का उर होना, जैसे कारणों से इन राज्यों में कृषि भूमि का पर्याप्त विस्तार हुआ है। साथ ही बिहार, गुजरात, महाराष्ट्र, केरल राज्यों में भी 60 प्रतिशत से अधिक भूमि पर कृषि क्षेत्र विस्तारित है अरुणाचल प्रदेश, मिजोरम, उत्तरांचल, मणीपुर, सिक्किम तथा हिमाचल प्रदेश में असमतल पहाड़ी भूमि एवं वन भूमि के अधिक विस्तार के कारण कृषि भूमि का सीमित विस्तार हो सका है।

(ब) द्वि फसली भूमि –

इस वर्ग में उस भूमि को सम्मिलित किया जाता है, जिस पर एक कृषि वर्ष में एक से अधिक बार फसल उगाई जाती है। निरा बोये गये क्षेत्रफल के जिस भाग में वर्ष में दो से अधिक फसल उगाई जाती है उसे द्विफसली भूमि में वर्गीकृत किया जाता है।

यह क्षेत्रफल फसलों की सघनता का द्योतक है, जो फसल क्षेत्र में वृद्धि करता है। दो फसली क्षेत्र का विस्तार वर्षा की पर्याप्त मात्रा तथा उसका सामयिक वितरण, भूमि नमी धारण करने की क्षमता, सिंचाई सुविधाओं की उपलब्धता, भूमि की उत्पादन क्षमता, फसल स्वरूप, कृषिकों के अधिक उत्पादन करने की अभिरूचि आदि कारणों से प्रभावित होती है।

तालिका क्रमांक 2

भारत में भूमि उपयोग : द्वि फसली भूमि का क्षेत्र

वर्ष 2014-15

संवर्ग प्रतिशत सम्मिलित राज्यों के नाम  
(शुद्ध कृषि भूमि से)

80 से अधिक पंजाब, हरियाणा, त्रिपुरा, प. बंगाल, केरल

60 से 80	हिमाचल प्रदेश, सिक्किम, पाण्डिचेरी, अंडमान निकोबार
40 से 60	उत्तरांचल, उत्तरप्रदेश, बिहार, असम, मध्यप्रदेश, दिल्ली, लक्षदीव, जम्मूकश्मीर,
20 से 40	राजस्थान, अरुणाचल प्रदेश, नागालैण्ड, छत्तीसगढ़, गुजरात, महाराष्ट्र, आन्ध्रप्रदेश कर्नाटक, गोवा, केरल, तमिलनडु, तेलंगाणा, दादरा एवं नगर हवेली,
20 से कम	मेघालय, झारखण्ड, उड़ीसा,

विभिन्न संवर्गों के अंतर्गत भूमि उपयोग का वर्गीकरण के विश्लेषण से भारत में कृषि एवं गैर कृषि भूमि का स्वरूप स्पष्ट होता है। उक्त विश्लेषण के आधार पर देश की जीवन निवहक कृषि भूमि का उपयुक्त नियोजन कर न सिर्फ भूमि उपयोग क्षमता में वृद्धि की जा सकेगी अपितु सामाजिक आर्थिक एवं पर्यावरणीय दृष्टिकोण से अनुकूलतम् भूमि उपयोग के लिए भी नीतियां बनाने में मार्ग प्रशस्त हो सकेगा।

#### कृषि विकास में असंतुलन

कृषि विकास की भौतिक, आर्थिक एवं सामाजिक दशाएँ समान रूप से अनुकूल नहीं होती हैं। इसके कारण कृषि विकास का क्षेत्रीय प्रतिरूप में असंतुलन दिखाई देता है। कृषि विकास में असंतुलन अथवा विषमता ज्ञात करने के लिए अनेकानेक चरों (Variables) एवं सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया जाता रहा है। प्रसिद्ध भूगोलवेत्ता माजिद हुसैन ने देश के कृषि उत्पादकता प्रदेशों का निर्धारण किया है। उन्होंने उत्पादकता के सूचकांक मान के आधार पर उत्पादकता क्षेत्रों का निर्धारण किया जो कृषि विकास के स्तर का ज्ञान कराता है। इनके अनुसार भारत के फसल उत्पादकता प्रदेश निम्नानुसार है—

1. **अति उच्च उत्पादकता (Very High Productivity)**— उच्च उत्पादकता प्रदेश के अन्तर्गत गंगा-यमुना मैदान के पंजाब, हरियाणा, गंगा-यमुना दोआब, बिहार का मध्यवर्ती गंगा मैदान, पं. बंगाल तथा असम के निम्नवर्ती क्षेत्रों को सम्मिलित किया गया है। इस प्रदेश के अन्तर्गत कुछ विशिष्ट फसलों (गेहूँ, चावल, जूट, मक्का, दलहन एवं तिलहन) की उत्पादकता अति उच्च वर्ग में आती है। दक्षिणी भारत में विशेषकर पालघाट, तंजोर, आन्ध्र प्रदेश का गण्टूर, उड़ीसा का कटक क्षेत्र इसी वर्ग में सम्मिलित है। इस अति उच्च उत्पादकता वाले क्षेत्र में भौगोलिक दशायें कृषि के लिए उपयुक्त हैं।
2. **उच्च उत्पादकता (High Productivity)**— इस वर्ग में भी उपर्युक्त प्रदेशों के उपान्त क्षेत्र आते हैं। इसमें उत्तरी भारत के मैदानी क्षेत्र के अतिरिक्त आन्ध्र प्रदेश का तटवर्ती क्षेत्र, तमिलनाडु का तटीय भाग, गुजरात का सूरत क्षेत्र तथा महाराष्ट्र के कोल्हापुर एवं सतारा जिले सम्मिलित हैं। धरातलीय उपयुक्तता, जलवायु एवं मृदा की उत्तमता तथा कृषि हेतु आवश्यक प्रावधान की सुलभता आदि के कारण ये क्षेत्र उच्च कृषि उत्पादकता के अन्तर्गत हैं।
3. **मध्यम उत्पादकता (Medium Productivity)**— मध्यम उत्पादकता का क्षेत्र उत्तर प्रदेश के सहारनपुर जिले की शिवालिक पहाड़ियों के सहारे में छिट-पुट रूप से, पूर्वी कर्नाटक, पं. बंगाल में वीरभूमि, बांकुरा, दिनाजपुर जिले सम्मिलित है।
4. **निम्न उत्पादकता (Low Productivity)**— इस प्रदेश के अन्तर्गत उत्तरी भारत में हिमाचल का उत्तरी भाग, उ.पू. बिहार, अर्द्ध रेगिस्तानी राजस्थान, गुजरात का अहमदाबाद क्षेत्र आता है। निम्न कृषि उत्पादकता के अधिकांश क्षेत्र दक्षिणी भारत में उड़ीसा आन्ध्रप्रदेश केरल, कर्नाटक, महाराष्ट्र एवं गुजरात में छिट-पुट रूप से मिलते हैं। इस प्रदेश में कृषि के लिए दशाएँ बहुत अनुकूल नहीं हैं।
5. **अति निम्न उत्पादकता (Very Low Productivity)**— इसके अन्तर्गत जम्मू, लद्दाख, राजस्थान का मरुभूमि, दक्षिण तेलंगाना तथा कर्नाटक का पठारी भाग आदि सम्मिलित है।

राष्ट्रीय नीति आयोग के सलाहकार डॉ. जसपाल सिंह (2018) ने भारतीय कृषि के विकास में क्षेत्रीय असंतुलन एक अध्ययन प्रस्तुत किया है



जिसमें उन्होंने 2004-05 से लेकर 2014-15 तक 10 वर्षों के कृषि आंकड़ों के आधार पर देश के 23 बड़े राज्यों को सम्मिलित किया है।

कृषि उत्पादकता स्तर में क्षेत्रीय असंतुलन ज्ञात करने के लिए

$$\text{कृषि उत्पादकता (रूपये/हेक्टेयर)} = \frac{\text{एन.एस.डी.पी.}}{\text{एन.एस.ए.}}$$

$$\text{जहां} = \frac{\text{एन.एस.डी.पी.}}{\text{एन.एस.ए.}} = \text{किसी राज्य का किसी समय पर शुद्ध राज्यीय घरेलु कृषि उत्पादन}$$

$$\text{एन.एस.ए.} = \text{किसी राज्य का किसी समय पर शुद्ध बोया गया क्षेत्र}$$

इसके आधार पर सांख्यिकी परीक्षणों के द्वारा कृषि उत्पादकता की गणना की गई। इनके अनुसार कृषि विकास का प्रमुख तरीका प्रति इकाई भूमि उत्पादकता बढ़ाना ही होना चाहिए। किन्तु कृषि उत्पादकता में देश के राज्यों के बीच काफी असंतुलन है। मौजूदा मूल्यों पर अरुणांचल प्रदेश की उत्पादकता सबसे अधिक 326917 रूपये प्रति हेक्टेयर है। उच्च उत्पादकता वाले राज्यों में आंध्रप्रदेश (260316 रूपये/हेक्टेयर) और तमिलनाडू (259921 रूपये/हेक्टेयर) सम्मिलित हैं। पंजाब और हरियाणा जैसे राज्य विगत कई दशकों तक खाद्यान्न उत्पादकता रैंकिंग में प्रमुख स्थान पर हैं, किन्तु 2004-05 से 2014-15 के बीच पंजाब ने 1.73 प्रतिशत और हरियाणा ने 3.15 प्रतिशत की मामूली विकास दर दर्ज किया है। दूसरी ओर ओडिशा (6.12 प्रतिशत), मध्यप्रदेश (5.54 प्रतिशत) ने उत्पादकता की ऊंची विकास दर हासिल की है। इन राज्यों ने बाजार सुधारों और कृषि के अनुकूल नीतियों को प्रभावी ढंग से अपनाते हुए लागू किया है। कृषि उत्पादकता में क्षेत्रीय असमानताएं सिंचाई कवरेज, फसलों की संख्या, उर्वरक प्रयोग, कृषि ऋण, खेत आकार, और संस्थागत कारकों के अंतर्संबंधों का परिणाम है।

तालिका क्रमांक – 3  
अंतर क्षेत्रीय उत्पादकता असंतुलन के निर्धारक तत्व

राज्य/केंद्र शासित प्रदेश	सिंचाई कवरेज प्रतिशत	फसली तीव्रता प्रतिशत	उर्वरक उपयोग (किग्रा/हेक्टे.)	ऋण (रूपये /हेक्टे.)	खेत आकार (हेक्टे.)	ए.एम. एफ. एफ. आर. आई में रैंकिंग
आंध्रप्रदेश	50.5	123.3	226	118883	1.08	7.4
अरुणांचल प्रदेश	18.7	132.8	2	7594	3.51	21.1
असम	9.2	144.4	45	13812	1.1	37.1
बिहार	68.7	145.4	220	76809	0.39	12.4
छत्तीसगढ़	31.2	122.4	100	18110	1.36	47
गोवा	24.6	122.0	49	44567	1.14	52.8
गुजरात	47.1	124.0	125	43257	2.03	70.1
हरियाणा	89.1	185.6	220	141379	2.25	65
हिमाचल प्रदेश	21.0	167.0	57	93133	0.99	59.6
जम्मू कश्मीर	42.8	155.3	64	36403	0.62	7.4
झारखण्ड	14.3	112.2	55	264510	1.17	49.2
कर्नाटक	34.2	121.9	175	84462	1.55	55.5
केरल	17.9	128.5	44	212406	0.22	10.8

मध्य प्रदेश	43.3	155.1	84	33941	1.78	64.4
महाराष्ट्र	18.2	135.3	122	36194	1.44	66.4
मणिपुर	18.0	100.0	42	418	1.14	7.4
मेघालय	37.1	120.0	0	3774	1.37	14.3
मिजोरम	14.5	100.0	18	6842	1.44	37
नागालैण्ड	21.2	130.3	6	3074	6.02	33.3
ओडिशा	28.7	115.6	63	40793	1.04	27.9
पंजाब	98.7	190.8	249	205525	3.77	43.9
राजस्थान	42.0	138.3	62	38597	3.07	69.6
तमिलनाडू	56.6	124.4	175	218339	0.8	17.7
उत्तर प्रदेश	80.2	157.5	156	22490	0.76	45.8
उत्तराखण्ड	49.5	156.7	169	90492	0.89	25.2

स्रोत - कृषि आंकड़े एक नजर में, डी.ई.एस, एम.ओ.एफ.डब्ल्यू.पी.आई.

उक्त सारणी में देश के 25 बड़े राज्यों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है, कि देश में कृषि के लिए महत्वपूर्ण आधारभूत सुविधा सिंचाई प्रतिशत के मामले में अत्यधिक क्षेत्रीय विषमताएं पायी जाती है। पंजाब एवं हरियाणा राज्यों में जहां 98.7 एवं 89.1 प्रतिशत भूमि सिंचित है। वही महाराष्ट्र 18.2, झारखण्ड 14.3, हिमाचल प्रदेश 21.0 एवं असम में मात्र 9.2 प्रतिशत ही सिंचाई कवरेज है। उत्पादकता के संयुक्त सूचकांक के आधार पर देश में फसल उत्पादकता के निम्न स्तर दिखाई पड़ते हैं -

- (1) अत्यंत उच्च स्तर (60 से अधिक) गुजरात, हरियाणा, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र एवं राजस्थान।
- (2) उच्च स्तर (50 से 60) हिमाचल प्रदेश, गोवा, एवं कर्नाटक



- (3) मध्यम स्तर (40 से 50) पंजाब, छत्तीसगढ़, झारखण्ड, एवं उत्तरप्रदेश
- (4) निम्न-मध्यम (30 से 40) असम, मिजोरम एवं नागालैण्ड
- (5) निम्न स्तर (20 से 30) ओडिशा, उत्तराखण्ड एवं अरुणाचल प्रदेश
- (6) अत्यंत निम्न स्तर (20 से कम) तमिलनाडू, मेघालय, मणीपुर, केरल, बिहार, आंध्रप्रदेश, एवं जम्मू कश्मीर।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के वर्ष 2009 में "Regional Variation in Agricultural Productivity – A District Level Study" में देश के 618 जिलों में से 551 जिलों के कृषि उत्पादकता सूचकांको के आधार पर एक वृहद् रिपोर्ट प्रस्तुत किया गया।

तालिका क्रमांक -4  
भारत: कृषि विकास के सूचक

उत्पादकता वर्ग	उत्पादकता / हेक्टेयर (रूपये)	उर्वरक उपयोग / कि.ग्रा.	श्रम उत्पादकता (रूपये)	सिंचाई (प्रतिशत)	वर्षा मि.मि.	कृषि श्रमिक संख्या	फल-साब्जिया का प्रतिशत	फसल सघनता (%)	ग्रामीण गरीबी (%)
अत्यंत निम्न	12910	53	9852	24	935	161	2.3	122	36
निम्न	23442	101	14053	46	1189	215	5.7	134	31
औसत	32192	124	16278	50	1224	246	9.2	140	29
उच्च	46360	193	26837	58	1212	254	12.9	150	23
अति उच्च	73284	259	56679	64	1507	181	17.3	164	18
औसत	32834	132	20964	46	1193	213	8.5	139	29

इस अध्ययन में देश के 24 राज्यों के 551 जिलों को सम्मिलित किया गया। इसमें उत्पादकता के 09 प्रकार के सूचकों (Indicators) का प्रयोग किया गया। इन 09 प्रकार के सूचकों के आधार पर संयुक्त सूचकांक की गणना कर कृषि उत्पादकता के पांच विकास स्तर निर्धारित किये गये। इनमें अत्यंत उच्च संवर्ग (स्कोर 57225 से अधिक) में 63 जिले, उच्च संवर्ग (स्कोर 37712-57225) में 105 जिले, औसत संवर्ग (स्कोर 27955-37712) में 102 जिले, निम्न संवर्ग (18199-27955) में 161 जिले तथा अति निम्न संवर्ग (18199 से कम) में 120 जिले सम्मिलित हैं।

तालिका क्रमांक -5  
भारत: कृषि विकास स्तर

उत्पादकता वर्ग	सम्मिलित जिलों की संख्या	शुद्ध कृषित भूमि का प्रतिशत	फसल उत्पादन मूल्य का भाग प्रतिशत
अत्यंत निम्न	120	31.46	13.00
निम्न	161	28.38	22.86
औसत	102	15.86	17.71
उच्च	105	15.06	24.38
अत्यंत उच्च	63	9.24	22.15

उत्पादकता सूचकों के आधार पर 551 जिलों के वितरण प्रतिरूप के अनुसार अत्यंत उच्च उत्पादकता वाले जिलों में देश के शुद्ध कृषित भूमि का मात्र 9.24 प्रतिशत भाग सम्मिलित है, जबकि 15.06 प्रतिशत शुद्ध कृषित भूमि (NSA) उच्च उत्पादकता वर्ग में सम्मिलित जिलों में पायी जाती है। देश के 31.46 प्रतिशत शुद्ध कृषित भूमि जिनमें 120 जिले की कृषि भूमि सम्मिलित है, अत्यंत निम्न उत्पादकता वर्ग एवं 28.38 प्रतिशत शुद्ध कृषि भूमि निम्न

उत्पादकता वाले जिलों जिनकी संख्या 161 है, में पायी जाती है। इसी प्रकार फसल उत्पादन मूल्य (VCO) के मामले में अत्यंत उच्च उत्पादकता क्षेत्रों का 22.15 प्रतिशत, उच्च उत्पादकता क्षेत्रों का 24.38 प्रतिशत, औसत उत्पादकता क्षेत्रों का 17.71 प्रतिशत, निम्न उत्पादकता क्षेत्रों का 22.86 प्रतिशत तथा अत्यंत निम्न उत्पादकता क्षेत्र वाले जिलों का फसल उत्पादन मूल्य भाग 13.00 प्रतिशत है।

तालिका क्रमांक - 6

भारत: कृषि उत्पादकता के अनुसार राज्यों के जिलों की सहभागिता संख्या  
उत्पादकता का वर्ग

(रू/हेक्टेयर शुद्ध कृषि क्षेत्र)

राज्य	अत्यंत निम्न (<18199)	निम्न (18199-27955)	औसत (27955-37712)	उच्च (37712-57225)	अति उच्च (>57225)	संपूर्ण योग
आंध्रप्रदेश	2	5	9	4	2	22
अरुणाचल प्रदेश	7	3	2	0	0	12
असम	0	16	6	1	0	23
बिहार	2	18	10	7	0	37
छत्तीसगढ़	13	3	0	0	0	16
गुजरात	5	7	7	5	1	25
हरियाणा	0	1	4	9	5	19
हिमाचल प्रदेश	0	0	2	4	6	12



जम्मू एवं कश्मीर	4	5	3	1	1	14
झारखण्ड	2	8	8	3	1	22
कर्नाटक	9	8	2	5	2	26
केरल	0	0	0	4	10	14
मध्य प्रदेश	26	20	1	1	0	48
महाराष्ट्र	16	7	6	2	0	31
मेघालय	1	3	1	1	0	6
मिजोरम	1	5	0	0	0	6
नागालैण्ड	5	3	0	0	0	8
ओडिशा	0	10	10	10	0	30
पंजाब	0	0	0	6	11	17
राजस्थान	19	11	2	0	0	32
तमिलनाडू	1	5	6	15	2	29
उत्तर प्रदेश	5	21	18	19	7	70
उत्तराखण्ड	1	2	4	5	1	13
पश्चिम बंगाल	0	0	1	3	14	18
संपूर्ण योग	120	161	102	105	63	551

कृषि उत्पादकता स्तर के राज्यवार विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि देश के सबसे वृहद राज्य उत्तरप्रदेश के 70 जिलों में से 07 जिले अत्यंत उच्च उत्पादकता, 19 जिले उच्च उत्पादकता, 18 जिले औसत उत्पादकता, 21 जिले निम्न उत्पादकता तथा 05 जिले अत्यंत निम्न कृषि उत्पादकता संवर्ग में सम्मिलित है। इसी तरह राजस्थान के 32 जिलों में 02 जिले औसत कृषि उत्पादकता, 11 जिले निम्न कृषि उत्पादकता तथा 19 जिले अत्यंत निम्न कृषि उत्पादकता वर्ग में सम्मिलित है। 30 जिलों वाला ओडिशा राज्य में 10 – 10 जिले क्रमशः उच्च, औसत एवं निम्न कृषि उत्पादकता स्तर में सम्मिलित है। बिहार जैसे बड़े राज्य जहां 37 जिले में भी अत्यंत उच्च वर्ग में एक भी जिला सम्मिलित नहीं है जबकि निम्न एवं अत्यंत निम्न में क्रमशः 18 एवं 02 जिले सम्मिलित है। जनजातीय बहुल छत्तीसगढ़ राज्य के 16 जिलों में एक भी जिला अति उच्च, उच्च एवं औसत स्तर में सम्मिलित नहीं है जबकि उसके 13 जिले अत्यंत निम्न एवं मात्र 03 जिले निम्न स्तर में सम्मिलित है।

#### बारहवीं पंचवर्षीय योजना और कृषि

देश में बारहवीं पंचवर्षीय योजना का काल 2012 से 2017 तक निर्धारित थी। इस योजना के अंतर्गत योजना आयोग ने वार्षिक विकास दर 10 प्रतिशत रखने का लक्ष्य निर्धारित किया था। वैश्विक आर्थिक संकट का असर भारतीय अर्थव्यवस्था पर भी पडा, जिससे लक्ष्य हासिल करने में कठिनाई आई। वर्ष 2012-13 में 18028.38 करोड़, 2013-14 में 19027.58 करोड़, 2014-15 में 19513.58 करोड़, 2015-16 में 15333.92 करोड़ तथा 2016-17 में 37029.81 करोड़ रुपये वास्तविक रूप से कृषि, सहकारिता एवं किसान कल्याण क्षेत्र में व्यय किया गया। इस योजना में कृषि के लिए भूमि व्यवस्थापन कृषि अनुसंधान एवं प्रौद्योगिकी के विकास विस्तार, कृषि में सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्रों की भागेदारी तथा बागवानी कृषि, के विशेष उन्नयन की बात दृष्टिकोण पत्र में कहा गया। बारहवीं पंचवर्षीय योजना काल में देश में खाद्यान्न फसलों की लक्ष्य से अधिक उत्पादन किया गया। इस अवधि में खाद्यान्न फसलों के उत्पादन का लक्ष्य 1482.99 मिलियन टन रखा गया था जिसकी तुलना में 1585.68 मिलियन इन खाद्यान्न देश में पैदा किये गये। इन खाद्यान्नों में चावल एवं गेहूं

खाद्यान्न का बंपर उत्पादन इस अवधि में किया गया। इनकी तुलना में अन्य अनाज एवं व्यापारिक फसलों का उत्पादन लक्ष्य के अनुरूप नहीं हो सका।

तालिका क्रमांक-7  
बारहवीं पंचवर्षीय योजना में कृषि  
(2012 से 2017)

क्र.	फसल	इकाई	2012 का वास्तविक उत्पादन	2017 का लक्ष्य एवं लक्ष्य पूर्ति	
				लक्ष्य	लक्ष्य पूर्ति
1	सम्पूर्ण खाद्यान्न	मिलियन टन	257.13	1482. 99	1585.68
2	चावल	मिलियन टन	105.24	638.10	644.39
3	गेहूं	मिलियन टन	93.51	471.67	566.39
4	मोटे अनाज	मिलियन टन	40.04	261.20	254.87
5	दालें	मिलियन टन	18.34	120.44	119.42
6	तिलहन	मिलियन टन	30.94	201.00	179.04
7	गन्ना	मिलियन टन	314.20	2102. 00	2087.09
8	कपास	मिलियन गांठें	34.22	211.65	202.41
9	जूट मेस्टा	एवं मिलियन गांठें	10.93	70.3	65.37



Source- *Agricultural Statistics, At A Glance 2018 Page no.65*

भारत में पंचवर्षीय योजनाएँ, नियोजन की अवधारणा का आधार रही हैं। स्वतंत्रता के बाद भारतीय विकास के शुभारंभ में इसकी एक बड़ी भूमिका रही है। प्रथम पंचवर्षीय योजना काल से ही कृषि को सुदृढ़ करने का संकल्प प्रस्तुत किया गया तथा अनवरत् रूप से यह 2017 तक योजना आयोग एवं नीति आयोग के माध्यम से क्रियान्वित किया जाता रहा है। इन योजनाओं के माध्यम से देश में न सिर्फ आर्थिक प्रगति हो रही है अपितु सामाजिक न्याय, गरीबी हटाना, रोजगार सृजन, तथा आधुनिकीकरण करते हुए देशवासियों के जीवन शैली में सुधार लाना भी संभव हो रहा है।

### संदर्भ सूची

- 1- Chauhan, P.R. and Mahatam Singh(2004) *Bharat Ka Brihad Bhoogol*, Vasundhara Prakashan, Gorakhpur.
- 2- Govt. Of India (2020) *Varshik Sandarbh Granth*, Publication Division. New Delhi.
- 3- Husain Mazid(2018) *Krishi Bhoogol*, Rawat Publication , Jaipur
- 4- Krishan, Gopal(1992) *The Concept Of Agricultural Development*, Edited by Noor Mohammad, Concept Publishing House, No.04, Vol.07, pp29-36
- 5- Shrivastava, V. K. et.all (2007) *Pradeshik Niyojan Aur Santulit Vikas*, Vasundhara Prakashan, Gorakhpur.
- 6- Sharma, Rajesh(2018) *Agricultural and Regional Geography- A Geographical Study Of Chittorgarh District*, Himanshu Publication , Udaipur.
- 7- Sinha, Anil Kumar(2020) *Bharat Me Jal Sansadhan – Vikas avam Niyojan*, Blue Rose Publishers, New Delhi.
- 8- Sinha, Anil Kumar(2008-09) *Problem Of Low Agricultural Productivity in Tribal Areas, with Special Reference to Surguja Distric*. UGC, MRP.
- 9- Singh M.B. and K.K. Dubey(2006) *Regional Development Planning(In Hindi)* Tara Book Agency, Varanasi.
- 10- Tiwari, R. C.and B.N. Singh(2007) *Krishi Bhoogol*, Prayag Pustak Bhavan, Allahabad.
- 11- Govt. Of India – **Twelve Five years Plan(2012-17)** Vol. I , Planning Commission Of India.
- 12- Govt. Of India (2019) **PocketBook of Agricultural Statistics**, Ministry of Agriculture and Farmer Welfare, Directorate Of Economics and Statistics.

13. Govt. Of India (2013-14) Crop Diversification Programm in Haryana, Punjab and Western Uttar Pradesh, Ministry Of Agriculture, Krishi Bhavan, New Delhi.
14. भारत सरकार (2018-19) भारत की आर्थिक समीक्षा "कृषि और खाद्य प्रबंधन", खण्ड-2 पृष्ठ 172-196
15. भारत सरकार .बारहवीं पंचवर्षीय योजना (2012-2017) खण्ड-1, योजना आयोग, सांख्यिकीय बुलेटिन (2015-16) विपणन एवं निरीक्षण निदेशालय, कृषि सहकारिता एवं किसान कल्याण विभाग, भारत सरकार
- 16- मायी, सी.डी. एवं भागीरथ चौधरी (2021) कृषि आगे का रास्ता, योजना, अंक-जनवरी, पृष्ठ 46-49
17. Sinha, Anil Kumar (2011) Regional Disparity of Labour Productivity in India- A Geographical Study, Research zone, Vol.3 No. 3 June, pp 104-112
18. शेखर सी.एम.सी. (2014) भारतीय कृषि- नीति एवं निष्पादन की समीक्षा योजना, वर्ष-58, अंक-जून, पृष्ठ 27-32
19. सक्सेना, जगदीप (2020) कृषि: अर्थव्यवस्था की तारणहार, योजना, अंक-नवंबर, पृष्ठ 36-40

५ ५ ५ ५ ५